दोहा:

रुचिर चौतनीं सुभग सिर मेचक कुंचित केस।
नख सिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस ॥ 219

अर्थ : सिर पर सुंदर चौकोनी टोपियाँ (दिये) हैं, काले और घुँघराले बाल हैं। दोनों भाई नख से लेकर शिखातक (एड़ी से चोटी तक) सुंदर हैं और सारी शोभा जहाँ जैसी चाहिए वैसी है॥

बय किसोर सुषमा सदन स्याम गौर सुख धाम।
अंग अंग पर वारिअहिं कोटि कोटि सत काम ॥220

अर्थ :- इनकी किशोर अवस्था है, ये सुंदरता के घर, साँवले और गौर रंग के तथा सुखके धाम हैं। इनके अंग-अंग पर करोड़ों-अरबों कामदेवों को निछावर कर देना चाहिए॥

बिप्रकाजु करि बंधु दोउ मग मुनिबधू उधारि।
आए देखन चापमख सुनि हरषीं सब नारि ॥ 221

अर्थ :- दोनों भाई ब्राह्मण विश्वामित्र का काम करके और रास्ते में मुनि गौतमकी स्त्री अहल्याका उद्धार करके यहाँ धनुषयज्ञ देखने आये हैं; यह सुनकर सब स्त्रियाँ प्रसन्न हुई॥

बलरामकुमार

नाहिं त हम कहुँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि।
यह संघटु तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि॥

222

अर्थ : नहीं तो (विवाह न हुआ तो) हे सखी! सुनो, हमको इनके दर्शन दुर्लभ हैं। यह संयोग तभी हो सकता है जब हमारे पूर्वजन्मों के बहुत पुण्य हों।

हियँ हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद।
जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानंद॥

223

अर्थ : सुंदर मुख और सुंदर नेत्रोंवाली स्त्रियाँ समूह-की-समूह हृदय में हर्षित होकर फूल बरसा रही हैं। जहाँ-जहाँ दोनों भाई जाते हैं, वहाँ-वहाँ परम आनंद छा जाता है।

सकल सिसु एहि मिस प्रेमबस परसि मनोहर गात।
तन पुलकहिं अति हरषु हियँ देखि देखि दोउ भ्रात॥

224

अर्थ : सब बालक इसी बहाने प्रेम के वश होकर श्रीरामजी के मनोहर अंगो को छू कर शरीर से पुलकित हो रहे हैं। और दोनों भाइयों को देख देख कर उनके हृदय में अत्यंत हर्ष हो रहा है।

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी विभाग
डॉ. एल.के.वी.डी.
कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार